रात्रीक्लास ओमशांति 19.1.68

बाबा ने समझाया था साइंस पर सायलेंस की जीत होती है। जब आत्मा सायलेंस है तो उनमें ताकत है। सायलेंस यहां तो नहीं है। होनी है। साइंस पर सायलेंस विजय पाती है। विश्व में शांति होती है। तो शांति में ताकत है। शांति की ताकत स्थापन करते हैं। साइंस की ताकत विनाश करती है। प्रश्न जो पूछते हैं सो रांग–राइट पूछने आवेगा नहीं। इस समय है ही अनराइटियस मनुष्य। वह पूछ क्या सकेंगे? उन्हों को जवाब क्या देंगे? नोट कर रखेंगे। बस। खर–तील कुछ नहीं। तुम बच्चे शांति से विजय पाते हो। गाया जाता है रिलीजन इज माइट। उनको लिखना है रिलीजन इज माइट ,जो ही साइंस पर जीत पाती है। साइंस तुमको मदद करते हैं विनाश में। अब वह 15मिनट भाषण लिए टाइम देते हैं तो लिखना पड़े। बाबा को लिखकर भेजे। तो बाबा करेक्शन कर सकते हैं। बच्चे समझते तो हैं रिलीजन स्थापन हो रही है। साइंस से विनाश हो रहा है। ऐसे2 रेस्पांड लिखना चाहिए। रिलीजन से स्थापना होत है। साइंस फिर विनाश में मदद देते हैं। यह डिटेल में लिख देना पड़े। समझेंगे नहीं, न ही तुम्हारा आवाज़ निकलेगा। वह तब निकलेगा जब समझेंगे गीता का भगवान कौन है फिर भगवान को भी जान जावेंगे। चरित्र मनुष्य का नहीं होगा। जो स्थापना ,विनाश,पालना का कर्तव्य करते हैं उनकी ही चरित्र होगी। जो इन बातों को समझते हैं नोट कर बच्चों को भेज देना चाहिए। तुम एक्युरेट समझाते हो। फिर भी किसको समझ में बड़ा मुश्किल आता है। अच्छा कहते हैं ठीक है, फिर क्या। कोई विरला ही अच्छी रीत समझेंगे और कहेंगे यह प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां जो समझाती हैं कान्ट्रास्ट यह तो ठीक है। बरोबर नालेज ईज माइट है। तुम हो प्रीतबुद्धि। तुम ही जीत पाते हो। बाकी तो हैं साइंस घमंडी। वह हैं विपरीत बुद्धि। जानते ही नहीं। तो विचार कर लिखना। बाबा भी विचार–सागर–मंथन करेंगे। फिर लिखकर भेज देंगे जो लिटरेचर लिखते हैं। संजय फिर करेक्ट कर भेज देंगे। यह तो समझते हैं इस समय नामाचार निकलेगा नहीं, जो तुम्हारा बहुत नाम हो जावे। भक्तिमार्ग के सेना से निकल ज्ञान में आते रहेंगे तब तुम्हारा नाम होगा। विचार कहता है अजन और वृद्धि चाहिए। टाइम पड़ा है। अभी नाम निकल नहीं सकता है। फिर भी भेज देने में हर्जा नहीं है। यह लड़ाई बहुत समय चलेगी। माया से लड़ते रहो। जब टाइम पूरा हो जावेगा फिर तो माया पर भी जीत हो जावेगी। अभी सतयुग में जाने में टाइम है। अजन सेना जास्ती चाहिए। गायन है राम गयो, रावण गयो जिनका बहू परिवार..... अभी ज्ञान और योग का पुरुषार्थ करते रहो। बच्चे समझते तो हैं इन 5विकारों रूपी दुश्मन पर जीत पानी है। रुहानी सेना भी तुम हो। मेहनत भी करनी है। इसमें ठंडाई नहीं करनी है। याद की यात्रा पर भागना है। यात्रा पर तो खुशी से जाते हैं ना। तुम्हारी है सच्ची खुशी। उनकी झूठी। तुमको विश्व की बादशाही मिलती है इस रुहानी यात्रा से। तुम जानते हो हमारी चढ़ती कला होती है। तो बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। यह है एम ऑब्जेक्ट। नर से ना. नारी से लक्ष्मी। यह तो दंत कथायें सुनाते हैं। बेहद की खुशी ,बेहद का नालेज बाप ही देते हैं। तुमको सब कुछ बेहद का मिलता है। कब भी कोई बात में मूंझता हो तो बाबा से पूछ सकते हैं। फिर भी सर्जन है ना। सभी संशय मिट जानी चाहिए। बाप विश्व की बादशाही देते हैं। इसमें टैक्स आदि कुछ नहीं लगता है। विलायत से आते हैं तो बहुत सौगात ले आते हैं। 10वर्ष के बाद आता है तो बहुत कुछ ले आते हैं। बाप सभी प्वाइंट्स समझाते रहते हैं। कहां भी मूंझो तो डायरैक्ट बाप से पूछ सकते हो। लज्जा करन से भूख मरेंगे। बच्चों को हक है बाप का पत्र लिखने का। ऐसे थोड़े ही दूसरा बच्चा कहेंगे हमसे पूछ कर लिखो। कोई से न बनती है वा कोई बात में मूंझते हैं तो बाप को लिख सकते हैं। एक फ्रीडम रावण से मिलती है दूसरा फ्रीडम बाप देते हैं। जो कुछ चाहिए पूछो। अभी तो बाप और रचना का जान गए हो। बाकी है रेजकारी। साइंस वाले हैं रावण सम्प्रदाय। तुम सायलेंस वाले हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। तुम्हारी प्रीत है ना। तुम हो गुप्त अंडरग्राउंड वारियर्स। कोई पहचान न सके। अच्छा, गुडनाइट।